I J R S S I S, Issue (XIV), Vol. (III), Sept 2026: 138-143
A Double-Blind Peer Reviewed Journal
OPEN ACCESS
e-ISSN 2347 – 517X
Original Article

Reg. No.: MH-NGP/0000167

INTERNATIONAL JOURNAL OF RESEARCHES IN SOCIAL SCIENCE AND INFORMATION STUDIES
© VMS RESEARCH FOUNDATION www.ijrssis.in

उच्च शिक्षा स्तर पर निजी संस्थानो के प्रभाव का अध्ययन

डॉक्टर दुर्गावती शर्मा
असिस्टेंट प्रोफेसर गृहविज्ञान विभाग,
कृपालु महिला महाविद्यालय कुंडा प्रतापगढ़,
प्रोफेसर राजेन्द्र सिंह रज्जू भैया यूनिर्वसिटी- इलाहाबाद उत्तर प्रदेश

Communicated : 18.06.2026	Revision : 20.07.2026 Accepted : 12.08.2026	Published: 30.09.2026

सारांश :
विगत कुछ वर्षो में भारत वर्ष के उच्च शिक्षा क्षेत्र के परिपेक्ष्य में उल्लेखनीय परिवर्तन देखने को आ रहा हैं। उच्च शिक्षा में हुए परिवर्तन और सुधारो से देश में तेजी से बढ़ते निजी उच्च शिक्षा संस्थानो पर महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ा हैं। जिसके कारण कुछ वर्षो से बहुत तेजी से वृद्धि देखी गई हैं। उच्च शिक्षा गहन ज्ञान और समझ प्रदान करती है। जिससे छात्रो के जीवन में विभिन्न क्षेत्र में ज्ञान के आयाम विकसित होते हैं। श्रेष्ठ ज्ञान और कौशल राष्ट्र के विकास में बहुमूल्य योगदान देते हैं। उच्च शिक्षा संस्थान में दी जाने वाली गुणवत्ता पूर्ण शिक्षा छात्रो के अन्दर गुणों का विकास करती हैं। शिक्षा की गुणवत्ता संस्थान के शिक्षक, बुनियादी ढॉचा, शिक्षण पद्धति, और पाठयसहभागी गतिविधियो आदि पर निर्भर करती है। उच्च शिक्षण संस्थानो के निजीकरण ने छात्रो के रोजगार के अवसर परिणामो और आय के विभिन्न अवसरो को बढाने और आर्थिक विकास प्रदान करने के लिए नई नीतियॉ और कार्यक्रमों का प्रारम्भ किया हैं। इस अध्ययन का उद्देश्य कुण्डा क्षेत्र के उच्च शिक्षण संस्थानो पर निजी संस्थानो के प्रभाव का अध्ययन करना हैं। डाटा चयन के लिए याद्दच्छिक प्रतिचयन विधि का प्रयोग किया गया। सर्वे विधि का प्रयोग करते हुए नमूने चयन के लिए 5 निजी शिक्षण संस्थानों और 5 सरकारी शिक्षण संस्थानों से 40 छात्रो को चुना गया। अध्ययन के परिणामों से पता चला कि निजी उच्च शिक्षण संस्थानों की शिक्षण व्यवस्था सरकारी उच्च शिक्षण संस्थानो से काफी हद तक श्रेष्ठ हैं।

प्रमुख शब्द- उच्च शिक्षा, निजीकरण, व्यक्तित्व विकास, संस्थान की गुणवत्ता

परिचय :

शिक्षा मानव विकास की आधार शिला हैं। शिक्षा के बिना मानव का विकास की कल्पना करना असम्भव हैं। मानव विकास ही किसी समाज की उन्नति और सम्पन्नता का वास्तविक प्रतीक माना जाता हैं। शिक्षा का महत्व दिन प्रतिदिन बढता जा रहा हैं तकनीकी प्रगति और आधुनिक जीवन स्तर के लिए विश्व भर में सुशिक्षितऔर कुशल लोगो की आवश्यकता हैं इसके अलावा शिक्षा को देश की आर्थिक उपलब्धि के लिए एक महत्वपूर्ण साधन माना जाता हैं। उच्च शिक्षा का मुख्य उद्देश्य मानवीय संसाधनो का वास्तविक मूल्यवर्धन करने के साथ-साथ व्यवसाय सेवा, राजनीति आदि बिभिन्न क्षेत्रो में धन और नेतृत्व क्षमता का विकास करना ही उच्चशिक्षा का सर्वोच्च लक्ष्य माना जाता हैं, क्योकि इसे ही आर्थिक विकास और तकनीकी विकास का सूत्रधार माना जाता हैं। 90 वे दशक के शुरुआत तक उच्चशिक्षा का वित्त पोषण मुख्य रुप से केन्द्र और राज्य सरकारो के द्वारा किया जाता था। लेकिन वर्तमान समय में उच्च शिक्षा के लिए छात्रो की बढती मॉग को देखते हुए सरकार ने निजी क्षेत्र को उच्च शिक्षा के क्षेत्र में आगे बढने के लिए प्रेरित किया हैं।

निजीकरण का साकारात्मक प्रभाव :

निजी उच्च शिक्षण संस्थान में देखा गया है कि ये संस्थाएं अक्सर बेहतर सुविधाए आधुनिक पाठयक्रम और बेहतर शिक्षण विधियॉ प्रदान करते हैं। इन निजी संस्थानो में बच्चो के लिए विशिष्ट कार्यक्रमो और विशेषज्ञयौ की उपलब्धता बढती हैं , जिससे छात्रो को अधिक विकल्प मिलते हैं। निजी संस्थानो में बाजार उन्मुख दिष्टकोण से संस्थानो मे दक्षता और नवीन शिक्षण विधियो को बढावा मिलता है। साथ ही निजी क्षेत्र की भागीदारी से सरकारी शिक्षा प्रणाली पर वित्तीय दबाव कम होता हैं तथा रोजगार के अवसर विशेषकर विदेशी निजीकरण के साथ , रोजगार और आय पर साकारात्मक प्रभाव पड़ता हैं।

निजीकरण का नाकारात्मक प्रभाव :-

निजीकारण होने से शिक्षा मंहगी होती जा रही हैं , जिससे आर्थिक रुप से कमजोर वर्ग शिक्षा सें वंचित रह जाते हैं। निजीकरण होने के कारण शिक्षा का व्यावसायिकरण होता जा रहा हैं। जिससे संस्थानो का ध्यान मानवीय और लोक तान्त्रिक मूल्यो के बजाय वित्तीय लाभ पर केन्द्रित होता जा रहा हैं। उच्च शिक्षण संस्थानो में निजीकरण होने के कारण पारदर्शिता जबाबदेही की समस्याए उत्पन्न होती जा रही हैं तथा संस्थानो के निजीकरण होने के कारण आर्थिक लाभ की चाह में मानविकी और सामाजिक विज्ञान जैसे बिषयो को नजर अंदाज किया जा रहा हैं।

उद्देश्य :

निजी एवं सरकारी उच्चशिक्षण संस्थानो की शिक्षा की गुणवत्ता की तुलनात्मक अध्ययन करना

परिकल्पना :

निजी एवं सरकारी उच्च शिक्षण संस्थानो की शिक्षा की गुणवत्ता में अन्तर पाया जायेगा।

साहित्य समीक्षा :

बेड़ा ओबेरोन मनमीत (2017) ने भारत में उच्च शिक्षा का निजीकरण की आवश्यकता , प्रभाव और सुझाव, आंतरराष्ट्रीय शोध पत्र में उच्च शिक्षा के निजीकरण की आवश्यकता को समझाया गया हैं। भारत में चीन और संयुक्त राज्य अमेरिका के बाद दुनिया की तीसरी सबसे बडी उच्च शिक्षा प्रणाली हैं। उच्च शिक्षा का मिशन समानता, न्याय, गुणवत्ता, रोजगार समावेशिता शिक्षा हासिल करना हैं। धन की अनुपलबधता की समस्या से निपटने के लिए नए संस्थानो की स्थापना के बजाय सरकार की प्राथामिकता मौजूदा संस्थानो की क्षमता का विस्तार करना और उच्च शिक्षा में नए शिक्षण संस्थानो को केवल निजी क्षेत्र में खोल कर शिक्षा का विकास किया जा सकता हैं।

ओझा चॉदनी (2018) भारत में उच्च शिक्षा पर गुणवत्ता आश्वासन के प्रभाव जैसे मुद्दे को उजागर करने की कोशिश की है। एक अन्य उद्देश्य कालेजो और विश्वविघलयो पर गुणवत्ता आश्वासन के प्रभाव के बारे में साहित्य की समीक्षा करना और इस गुणवत्ता आश्वासन प्रत्रिका में विभिन्न पक्षो की भूमिका का पता लगाना है। एक और बात यह है कि विभिन्न परिभाषाओ और इससे सम्बन्धित साहित्य का अध्ययन करके गुणवत्ता का अर्थ समझाना। अध्ययन गुणवत्ता और गुणवत्ता आश्वासन योजनाओ के बारे में है। बहुत कम संस्थान रेटिग एजेंसियो द्वारा मान्यता प्राप्त कर रहे है इसलिए, गुणवत्ता मूल्यॉकन और प्रभाव शीलता के महत्व के बारे में सभी हित धारको के बीच जागरुकता पैदा करने की आवश्यकता हैं।

अन्नवेशा और दिलीप (2021) इस बात पर चर्चा करते है कि भारत में उच्च शिक्षा का निजीकरण कोई नई अवधारण नही है, एक ओर उच्च शिक्षा पर खर्च वढ़ रहा हैं, वही दूसरी ओर सार्वजनिक उच्च शिक्षा के लिए सरकारी वित्तीय सहायता धीरे-धीरे कम हो रही हैं इसलिए निजी क्षेत्र मे लाभ केन्द्रित विश्वविद्यालय तेजी से बढ़ रहे हैं। इसलिए निजी क्षेत्र में लाभ केन्द्रित विश्वविद्यालय तेजी से बढ़ रहे हैं। निजी उच्च शिक्षा संस्थानो का तेजी से विकास भारत में उच्च शिक्षा के कई पहलुओ को विशेष रुप से उच्च शिक्षा में समानता और गुणवत्ता को प्रभावित कर रही हैं,

गिल (2021) ने निजी व्यवसायिक स्कूलो के लिए परिवर्तनकारी गुणवत्ता पैमाने को विकसित किए जिनमें महत्वपूर्ण आत्मविश्वास समस्या समाधान, कौशल, समग्र जागरुकता और निपुणता को प्रमुख गुणवत्ता आयमों के रुप में पहचाना गया है। वास्तविक शैक्षिक प्रतिबंधताओ के बिना मुख्य रुप से लाभ को अधिकतम करने के लिए स्थापित किए गए शोषणकारी संस्थाओं के बारे में चिन्ता बन रही हैं, जिससे छात्र के हितो की रक्षा और उच्च शिक्षा अखंडता को बनाए रखने के लिए मजबूत नियामक निरीक्षण और गुणवत्ता आश्वासन तंत्र की आवश्कता हैं।

सुभाष चंद्र राठौर (2023) भारत में उच्च शिक्षा के निजीकरण के परिणाम स्वरुप नई शैक्षणिक नीतियां और कार्यक्रम बने हैं जिनसे राष्ट्रीय और स्तर पर रोजगार, आय और आर्थिक विकास के अवसर इस भारतीय शिक्षा प्रणाली में तेजी से बदलाव आया है शिक्षा की बढ़ती मांग को पूरा करने के लिए, इस निजी करण ने व्यक्तियों और समाज दोनो को निजी स्कूलों, कॉलेज और विश्वविद्यालय स्थापित करने के लिए प्रेरित किया हैं। परिणाम स्वरुप निजी शिक्षण संस्थान प्रतिदिन देश भर में विस्तार कर रहें हैं।

कार्यप्रणाली

वर्तमान अध्ययन के लिये प्रतापगढ़ जिले के कुण्ड़ा क्षेत्र के याद्दच्छिक रुप से चयनित उच्च शिक्षा संस्थानो में से 5 निजी उच्च शिक्षण तथा 5 सरकारी उच्च शिक्षण संस्थानो मे से 40 नमूने का चयन किया। स्वनिर्मित प्रश्नावली के माध्यम से साक्षात्कार विधि द्वारा डाटा का विश्लेषण किया।

परिणाम और विश्लेषण :

चित्र 1 निजी और सरकारी शिक्षण संस्थानो के बुनियादी ढॉचे को दर्शाता है। परिणाम बताते है कि निजी और सरकारी शिक्षण संस्थानो में बुनियादी ढॉचे मे अन्तर देखा गया हैं। प्रतिशत दर्शाता हैं कि निजी शिक्षण संस्थानो मे 60% का बुनियादी ढाचा सरकारी शिक्षण संस्थानो 40% की तुलनामें बेहतर हैं क्योकि निजी संस्थानो के छात्रो के सर्वार्गीण विकास के लिए स्मार्ट क्लासेस, सुसज्जित कम्प्यूटर लैब, बाई फाई की व्यवस्था, सुसज्जित पुस्तकालय, परिवहन सुविधाये, छात्रावास, खेल के मैदान आदि जैसी बेहतर सुविधाये, प्रदान कर रहें हैं।

चित्र 2 निजी और सरकारी संस्थानो की शिक्षण पद्धति को र्दशता है। परिणाम बताते है कि निजी शिक्षण संस्थानो और सरकारी शिक्षण संस्थानो की शिक्षण पद्धतियो में अन्तर पाया गया हैं। सरकारी संस्थानो में पढाने वाले शिक्षक की गुणवत्ता (53%) निजी संस्थानो की शिक्षक की गुणवत्ता (43%) से बेहतर पाये गये है। सरकारी संस्थानो में पढाने वाले शिक्षक अपने आप को अपड़ेट करने के लिए कई ओरिएटेशन कोर्स करते है। बिभिन्न प्रकार के विकास कार्यक्रम में भाग लेते रहते हैं। जबकि निजी शिक्षण संस्थानो मे शिक्षक की गुणवत्ता और योग्यता के मापदण्डों पर नही होती हैं, और उन्हें ऐसे पाठयक्रम विकास वाले कार्यक्रमों का लाभ भी नही मिलता हैं।

चित्र 3 निजी और सरकारी शिक्षण संस्थानो में पढाने वाले छात्रो के व्यक्तित्व विकास को दर्शात है। उल्लेखित परिणम बताते हैं कि निजी और सरकारी शिक्षण संस्थानो में पढने वाले छात्रो के बीच व्यक्तित्व विकास में अन्तर पाया गया हैं। निजी शिक्षण सेंस्थान में पढनो वाले छात्रो के व्यक्तित्व विकास (61%) सरकारी शिक्षण संस्थानो मे पढने वाले छात्रों (39%) की तुलना में व्यक्तित्व विकास बेहतर हैं, क्योकि निजी शिक्षण संस्थानो अपने छात्रो के व्यक्तित्व विकास के लिए अपने संस्थानो मे नई-नई कार्यक्रमो का समय-&समय पर आयोजन करते हैं और साथ पैक्टिकली दुनियॉ से परिचित कराने के लिए शैक्षिक भ्रमण का भी आयोजन करते है। क्योकि आज के समाज की यह महत्वपूर्ण आवश्यकता हैं जबकि सरकारी उच्च शिक्षण संस्थानो में ऐसे कार्यक्रमों का आयोजन बहुत कम होता हैं। जिस कारण दोनो शिक्षण संस्थानो के छात्रो के वयक्तित्व विकास में अन्तर देखने को मिल रहा हैं।

चित्र 4 निजी और सरकारी शिक्षण संस्थानो के छात्रों के सहपाठयक्रम गतिविधियो को दर्शाता हैं। परिणाम बताते हैं कि निजी और सरकारी शिक्षण संस्थानो के सहपाठ्यक्रम गतिविधियों में अन्तर देखा गया हैं। प्रतिशत दर्शाता है कि निजी शिक्षण संस्थानो में सहपाठ्यक्रम गतिबिधियों में सम्मिलित (57%) सरकारी शिक्षण संस्थानो (43%) की तुलना में बेहतर हैं क्योकि निजी शिक्षण संस्थानो में छात्रों के सहपाठ्यक्रम गतिबिधियो मे सम्मिलित होने के लिए प्रोत्सहित किया जाता हैं।

चित्र 5 निजी और सरकारी शिक्षण संस्थानो में पठने वाले छात्रों के रोजगार के अवसर को दर्शाता हैं। उल्लेखित परिणाम बताते है कि निजी उच्च शिक्षण संस्थानो और सरकारी उच्च शिक्षण संस्थानो में पाये जाने वाले छात्रो के बीच अन्तर पाया गया हैं। परिणम प्रतिशत दर्शाते हैं कि निजी संस्थानो में (63%) पठने वाले छात्र सरकारी उच्च शिक्षण संस्थानो के छात्रों (37%) से रोजगार के अवसर मे बेहतर पायी गयी हैं क्योकि निजी उच्च शिक्षण संस्थानो के छात्रो के लिए विभिन्न प्रकार के कोर्स चलाये जाते हैं। जैसे:- इंग्लिश स्पीकिंग कोर्स, एक्ट्रा कोचिंग क्लास को कैरिकुलर क्रियाये, नाटक, प्रेजेन्टेशन, सेमिनार आदि कोर्स चलाये जाते है और उनसे आत्मविश्वास बढ़ता हैं जिस कारण सरकारी उच्च शिक्षण संस्थानो मे ऐसी सुविधा न मिल पाने के कारण निजी उच्च शिक्षण संस्थानो के छात्रो से रोजगार के अवसरो में बेहतर प्रदर्शन करते हैं।

निष्कर्ष :

भारत में उच्च शिक्षा में छात्रो की बढती संख्या और बढती जरुरतो को पूरा करने के लिए निजीकरण उच्च शिक्षा संस्थानो ही एक मात्र मार्ग हैं। जहॉ छात्रो की जरुरतो को पूरा कर सकती हैं। निजीकरण छात्रो को उच्च शिक्षा प्रदान करने में देश और राज्य के बोझ को कम करने का एक मात्र संसाधन हैं। वर्तमान अध्ययन के निष्कर्ष से पता चलता है, कि निजी शिक्षण संस्थान कई क्षेत्रो जैसे- शिक्षण पद्धति, पाठयक्रम गतिविधियॉ, बुनियादी ढॉचा, व्याक्तित्व विकास और रोजगार के अवसर प्रदान में सरकारी शिक्षण संस्थानो से अब तक अच्छा प्रदर्शन कर रहे हैं, जबकि उच्च शिक्षा प्रणाली के निजीकरण से बढ़ती कीमते और खराब गुणवत्ता जैसी कई समस्याये जुडी हुयी हैं। यह भी देखा गया हैं कि यदि निजी उच्च शिक्षण संस्थानो पर कोई ऐसा नियन्त्रण कार्यकारी प्रणाली की स्थापित कर दिया जाए, तो निजी उच्च शिक्षा से जुड़ी समस्याओ का समाघान किया जा सकता है। उच्च शिक्षा के स्तर को केवल सरकारी और निजी शिक्षण संस्थानो के बीच सन्तुलन बनाकर ही इस समस्यॉ को सुघारा जा सकता हैं।

संदर्भ ग्रंथ सूची

अन्वेषा और दिलीप (2021) भारत में उच्च शिक्षाका विशेषाधिकार के आई आई टी जर्नल ऑफ मैनेजमेंट 17 (2) 110&125

गिल (2021) उच्च शिक्षा संस्थानों में परिवर्तनकरी गुणवत्ता अवधारणा पैमाने के विकास और सत्यापन आश्वासन के प्रभाव का अध्ययन] व्यवसाय अंनुसंधान रिसर्च पत्रिका 6 (137) 275&287

बेड़ा ओबेरॉय और मनमीत (2017) भारत में उच्च शिक्षा का निजीकरणः आवश्यकता, प्रभाव और सुझावप र अंतर्राष्ट्रीय जर्नल ऑफ़ रिसर्च मैनेजमेंट 8 (3) 15973&15975 आई एस एस एन 0976&3031

मनमीत ओवेरॉय बवेजा (2017) भारत में उच्च शिक्षा का निजीकरण : आवश्यकता, प्रभाव सुझाव, इन्टरनेशनल जर्नल ऑफ रीसेंट साइंटिफिक रिसर्च, 8 (3) 15973 - 15975

मिक्सो स्वेटनेस सिथोले (2024) दक्षिण अफ्रीका के शिक्षा क्षेत्र पर निजी उच्च शिक्षा संस्थानों की भूमिका और प्रभाव : एक व्यापक विश्लेषण, इन्टरनेशनल जर्नल आफ सोशल साइस एण्ड़ ह्युमन रिसर्च 7 (3) 03 - 19

रोजिब्बलोसो मेधी (2018) उच्च शिक्षा के निजीकरण के प्रभाव का अध्ययन विशेषकर कामरुप ग्रामीण जिले के संन्दर्भ में 3 (9) आई एस एस एन 2456&22165

सुभाष चंद्र राठौर (2023) उच्च शिक्षा में निजीकरण का महत्व : उन्नत सामाजिक अंनुसंधान पत्रिका 3 (5)

shodhganga.inflibnet.ac.in
htts://wol.iza.org
https: //pollution.sustainality.derectorg.com

तालिका 1 संकाय गुणवत्ता से संबंधित विवरण तालिका

संकाय गुणवत्ता	%
सरकारी शिक्षण संस्थानो	40
निजी शिक्षण संस्थानो	60

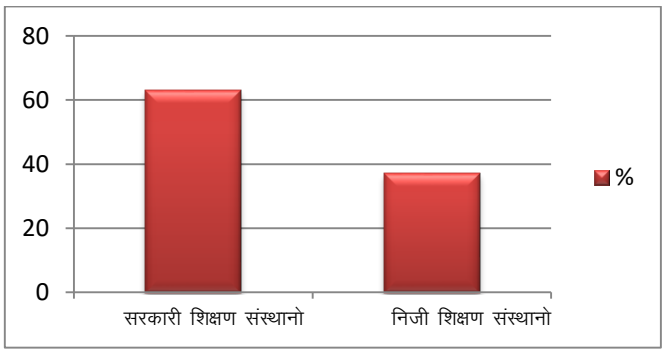

तालिका 2 शिक्षण पद्धित से संबंधित विवरण तालिका

शिक्षण पद्धित	%
सरकारी शिक्षण संस्थानो	53
निजी शिक्षण संस्थानो	43

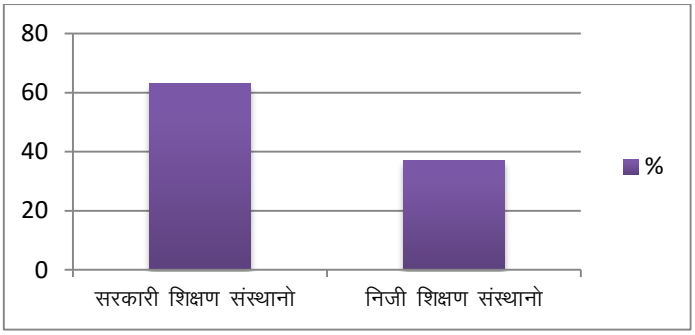

-

तालिका 3 व्यक्तितव विकास से संबंधित विवरण तालिका

व्यक्तितव विकास	%
सरकारी शिक्षण संस्थानो	61
निजी शिक्षण संस्थानो	39

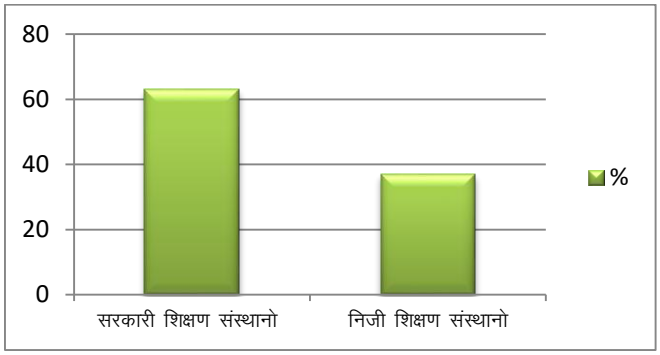

तालिका 4 पठ्यसहगामी क्रियाय से संबंधित विवरण तालिका

पठ्यसहगामी क्रियाय	%
सरकारी शिक्षण संस्थानो	43
निजी शिक्षण संस्थानो	57

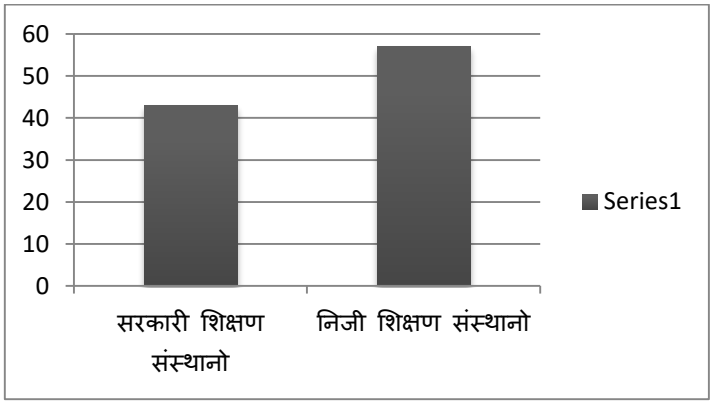

तालिका 5 रोजगार के अवसर से संबंधित विवरण तालिका
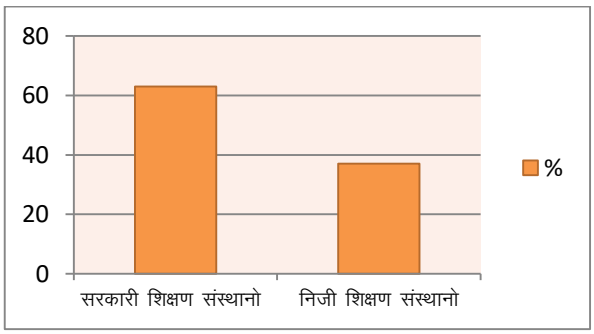
रोजगार के अवसर	%
सरकारी शिक्षण संस्थानो	63
निजी शिक्षण संस्थानो	37